कायाणुवादेण ओघालावे भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो वा तिण्णि वा, चत्तारि वा छव्वा, छव्वा णव वा, अट्ठ वा बारह वा, दस वा पण्णारह वा, बारस वा अट्ठारस वा, चोद्दस वा एक्कवीस वा, सोलस वा[1] चउवीस वा, अट्ठारस वा सत्तावीस वा, वीस वा तीस वा, बावीस वा तेत्तीस वा, चउवीस[2] वा छत्तीस वा, छव्वीस वा एगुणचालीस वा, अट्ठावीस वा बाएतालीस वा, तीस वा पंचेतालीस वा, बत्तीस वा अट्ठेतालीस वा, चउतीस वा एक्कवंचास वा, छत्तीस वा चउवंचास वा, अट्ठत्तीस वा सत्तवंचास वा जीवसमासा। दो जीवसमासेत्ति भणिदे पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि सव्वे जीवा दुविहा भवंति, अदो दो जीवसमासा वुच्चंति। तिण्णि जीवसमासेत्ति वुत्ते णिव्वत्तिपज्जत्ता णिव्वत्तिअपज्जत्ता लद्धिअपज्जत्ता इदि तिण्णि जीवसमासा भवंति। चत्तारि वा इदि वुत्ते तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चत्तारि जीवसमासा। छव्वा इदि वुत्ते दो णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दो णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा दो लद्धिअपज्जत्त-जीवसमासा एवं छ जीवसमासा। अधवा थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता,

कायमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप कहनेपर— चौदहों गुणस्थान होते हैं। दो अथवा तीन, चार अथवा छह, छह अथवा नौ, आठ अथवा बारह, दश अथवा पन्द्रह, बारह अथवा अठारह, चौदह अथवा इक्कीस, सोलह अथवा चौवीस, अठारह अथवा सत्तावीस, बीस अथवा तीस, बावीस अथवा तेतीस, चौवीस अथवा छत्तीस, छव्वीस अथवा उनचालीस, अट्ठावीस अथवा बयालीस, तीस अथवा पैंतालीस, बत्तीस अथवा अड़तालीस, चौतीस अथवा एकावन, छत्तीस अथवा चौपन, अडतीस अथवा सत्तावन जीवसमास होते हैं। आगे इन्हींका स्पष्टीकरण करते हैं—

दो जीवसमास होते हैं ऐसा कहनेपर पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे सभी जीव दो प्रकारके होते हैं; अतएव दो जीवसमास कहे जाते हैं। तीन जीवसमास होते हैं ऐसा कहने-पर निर्वृत्तिपर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इस प्रकार तीन जीवसमास होते हैं। चार जीवसमास होते हैं ऐसा कहनेपर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक; इसप्रकार चार जीवसमास कहे जाते हैं। छह जीवसमास होते हैं ऐसा कहनेपर त्रस और स्थावरके दो निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दो निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और दो लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं। अथवा, स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और

१ प्रतिषु 'अट्ठावीस वा' इति पाठः। २ प्रतिषु 'चोत्रीस वा तेत्तीस वा' इति पाठव्युत्क्रमः। अत उपरि प्रतिषु 'चउतीस वा' इति पाठोऽधिकः।

तसकाइया दुविहा सगलिंदिया विगलिंदिया, सगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि छ जीवसमासा[1] हवंति। तिण्णि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवं णव जीवसमासा हवंति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा, दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तस-काइया दुविहा सगलिंदिया वियलिंदिया त्ति, सगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता[2] त्ति एवं अट्ठ जीवसमासा। चत्तारि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा त्ति एवं बारस जीवसमासा हवंति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पंचिंदिया अपंचिंदिया, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अपंचिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं दस जीवसमासा हवंति। पंच णिव्वत्ति-

---

विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं। एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियके तीन निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तीन निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और तीन लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार नौ जीवसमास होते हैं। स्थावर-कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्म जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार आठ जीवसमास होते हैं। बादर स्थावरकायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके चार निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, चार निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और चार लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार बारह जीवसमास होते हैं। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्मकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पंचेन्द्रिय और अपंचेन्द्रिय (विकलेन्द्रिय)। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक। संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अपंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार दश जीवसमास होते हैं। बादर स्थावरकायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, संज्ञी पंचेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय

---

१ मु. समासा। तिण्णि.... २ मु. अपज्जत्ता एवं।

पज्जत्तजीवसमासा पंच णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा पंच लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं पण्णारस जीवसमासा हवंति । पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउ-काइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फदिकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं बारस जीवसमासा हवंति । छ णिव्वत्तिपज्जत्तजीव-समासा छ णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा छ लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवमट्ठारस जीवसमासा हवंति । एइंदिया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, बेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चउरिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता त्ति एवं चोद्दस जीवसमासा हवंति । सत्त णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्त णिव्वत्तिअपज्जत्ता सत्त लद्धिअपज्जत्ता एदे सव्वे घेत्तूण एक्कवीस जीवसमासा हवंति । पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता

जीवोंके पांच निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, पांच निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और पांच लब्ध्य-पर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार पन्द्रह जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । अप्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । तेजस्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार बारह जीवसमास होते हैं । छहों कायिक जीवोंकी अपेक्षा छ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, छ निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और छह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार अठारह जीवसमास होते हैं । एकेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म । बादर दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । सूक्ष्म दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । द्वीन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रीन्द्रिय दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । चतुरिन्द्रिय दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक । संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार चौदह जीवसमास होते हैं । बादर एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय इन सात प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा सात निर्वृतिपर्याप्तक जीवसमास, सात निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सात लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलकर इक्कीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । अप्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और

लिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, एवमट्ठारस जीवसमासा हवंति । णव णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा णव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा णव लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा[1] एदे सव्वे वि घेत्तूण सत्तावीस जीवसमासा हवंति । पुव्विल्ल-अट्ठारस-जीवसमासब्भंतरे साधारण-वणप्फदिपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय साधारणवप्फदिकाइया दुविहा णिच्चणि-गोदा चदुगदिणिगोदा चेदि । णिच्चणिगोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चदुगदिणि-गोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि जीवसमासे पक्खित्ते वीस जीव-समासा हवंति । दस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा दस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एदे तीस जीवसमासा हवंति । पुढविकाइया आउ-काइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फदिकाइया एदे सव्वे दुविहा बादरा सुहुमा त्ति, सव्वे बादरा सव्वे च सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि दुविहा हवंति, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवमेदे बावीस जीवसमासा । णिव्वत्तिपज्जत्तजीव-

---

और अपर्याप्तक । विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इस प्रकार ये अठारह जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, साधारणवनस्पतिकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय इन नौ प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा नौ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, नौ निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और नौ लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर सत्तावीस जीवसमास होते हैं । पूर्वमें कहे गये अठारह जीवसमासोंमेंसे साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर साधारणवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद । नित्यनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । चतुर्गतिनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । ये चार जीवसमास मिलनेपर बीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक, नित्यनिगोद, चतुर्गतिनिगोद, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय इन दश प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा दश निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दश निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और दश लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्नि-कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक ये पांचों कायके जीव दो दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म । ये सभी बादर और सभी सूक्ष्म जीव पर्याप्तक और अपर्याप्तक होते हैं । इस प्रकार प्रत्येक एक एक कायके सभी बादर और सभी सूक्ष्म जीव दो-दो प्रकारके हो जाते हैं । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इस प्रकार ये सब मिलाकर

---

१ प्रतिषु ' णवलद्धि...समासा ' इति पाठो नास्ति ।

समासा एक्कारस, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारस, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारस एवं तेत्तीस जीवसमासा हवंति । बावीस-जीवसमासाणमब्भंतरे तसपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय तसकाइया दुविहा हवंति समणा अमणा चेदि, समणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अमणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एदे चत्तारि पक्खित्ते चउवीस जीवसमासा हवंति । बारस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा बारस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा बारस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे छत्तीस जीवसमासा हवंति । पुव्विल्ल-चउवीसण्हं मज्झे अमणाणं पज्जत्त-अपज्जत्त-दो-जीवसमासे अवणिय अमणा दुविहा सयलिंदिया वियलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि पक्खित्ते छत्तीस जीवसमासा हवंति । तेरस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तेरस णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तेरस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे सव्वे एगूणचालीस जीवसमासा हवंति । छव्वीसण्हं मज्झे वणप्फदिकाइयाणं चत्तारि जीवसमासे अवणिय

बावीस जीवसमास हो जाते हैं । पृथिविकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद होते हैं और त्रसकायिक इन ग्यारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा ग्यारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, ग्यारह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और ग्यारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इस प्रकार सब मिलाकर तेतीस जीवसमास होते हैं । पूर्वोक्त बावीस जीवसमासोंमेंसे त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, समनस्क (संज्ञी) और अमनस्क (असंज्ञी) । समनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक, अपर्याप्तक । अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । ये चार जीवसमास मिलानेपर चौबीस जीवसमास होते हैं । पृथिविकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद और समनस्क त्रसकायिक तथा अमनस्क त्रसकायिक इन बारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा बारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, बारह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और बारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर छत्तीस जीवसमास होते हैं । पूर्वोक्त चौबीस जीवसमासोंमेंसे अमनस्क जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय । सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इन चार जीवसमासोंको मिला देनेपर छब्बीस जीवसमास होते हैं । पांचों स्थावरकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा विकलेन्द्रिय, अमनस्क पंचेन्द्रिय और समनस्क पंचेन्द्रिय इन तेरह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा तेरह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तेरह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और तेरह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर उनतालीस जीवसमास होते हैं । छब्बीस जीवसमासोंमेंसे वनस्पतिकायिक जीवोंके

वणप्फदिकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा बादरा सुहुमा, ते दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे छ जीवसमासे पक्खित्ते अट्ठावीस जीवसमासा हवंति । चउदस णिव्वत्तिपज्जत्त-जीवसमासा चउदस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा चउदस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे बादालीस जीवसमासा । अट्ठावीसण्हं मज्झे पत्तेयसरीर-पज्जत्तअपज्जत्त दो जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, तेवि सव्वे दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि भंगे पक्खित्ते तीस जीवसमासा हवंति । णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीव-समासा पण्णारस, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस एवमेदे सव्वे वि पंचेतालीस जीवसमासा हवंति । पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-साधारणसरीरवणप्फदिकाइया पत्तेयं पत्तेयं बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तभेदेण चउव्विहा हवंति, पत्तेयसरीरा वेइंदिया,

---

चार जीवसमास निकालकर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर । प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म । ये दोनों प्रकारके जीव भी दो दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । ये छह जीव-समास मिला देनेपर अट्ठावीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद, प्रत्येक-वनस्पतिकायिक, विकलेन्द्रिय, समनस्कपंचेन्द्रिय और अमनस्कपंचेन्द्रिय इन चौदहों प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा चौदह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास चौदह निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और चौदह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास, इसप्रकार ये सब मिलाकर ब्यालीस जीवसमास होते हैं । पूर्वोक्त अट्ठावीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयोनिक और बादरनिगोदअयोनिक । वे भी सब दो दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इस प्रकार ये चार भंग मिला देनेपर तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीर इनके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पति और अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पति, विकलेन्द्रिय, अमनस्कपंचेन्द्रिय और समनस्कपंचेन्द्रिय इसप्रकार इन पन्द्रह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा पन्द्रह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, पन्द्रह निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और पन्द्रह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर पैंतालीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीरवनस्पतिकायिक ये पांच प्रकारके जीव पृथक् पृथक् बादर, सूक्ष्म और उनमें भी पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार चार चार प्रकारके होते

तेइंदिया, चउरिंदिया, असण्णिपंचिंदिया, सण्णिपंचिंदिया पत्तेयं पत्तेयं पज्जत्ता[1] पज्जत्तभेदेण दुविहा हवंति । एदे सव्वे मेलिदे[2] बत्तीस जीवसमासा हवंति । सोलस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा सोलस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा सोलस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा च मेलिदे अट्ठेतालीस जीवसमासा हवंति । बत्तीस-जीवसमासेसु पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, ते च पत्तेयं पज्जत्तापज्जत्तभेदेण दुविहा एदे चत्तारि पक्खित्ते चोत्तीस जीवसमासा हवंति । सत्तारस णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्तारस णिव्वत्ति-अपज्जत्ता सत्तारस लद्धि-अपज्जत्ता एदे सव्वे एक्कावण्ण जीवसमासा हवंति । पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-णिच्चणिगोद-चउगदिणिगोदा बादरा सुहुमा च पज्जत्तापज्जत्तभेदेण दुविहा हवंति, पत्तेयवणप्फदि-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिन्दिय-असण्णि-सण्णि-पज्जत्ता पज्जत्तभेएण एदे वि पत्तेयं दुविहा हवंति एदे सव्वे वि छत्तीस जीवसमासा हवंति ।

हैं । प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय ये छहों प्रत्येक प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । इसप्रकार ये सब मिलाने पर बत्तीस जीवसमास होते हैं । पृथिविकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सोलह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सोलह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सोलह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिला देनेपर अड़तालीस जीवसमास होते हैं । पूर्वोक्त बत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकशरीरसंबन्धी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयोनिक (प्रतिष्ठित) और बादरनिगोद अप्रतिष्ठित । वे दोनों पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । ये चार जीवसमास मिला देनेपर चौतीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणवनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा सप्रतिष्ठित प्रत्येक-वनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठितप्रत्येक-वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञिक-पंचेन्द्रिय और संज्ञिकपंचेन्द्रिय जीवोंको अपेक्षा सत्रह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सत्रह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सत्रह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर इकावन जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोदसाधारणवनस्पतिकायिक ये छहों प्रकारके जीव बादर और सूक्ष्मके भेदसे बारह प्रकारके होते हैं । और वे प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके

१ मु. पज्जत्ता अपज्जत्ता । २ मु. मिलिदे ।

अट्ठारह णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठारस, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठारस सव्वेदे एगट्ठं कदे चउपण्ण जीवसमासा। पुणो पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासा छत्तीस-जीवसमासेसु अवणिय पत्तेयसरीरबादर-णिगोद-पदिट्ठिदापदिट्ठिद[1]-पज्जत्तापज्जत्त-सण्णिद-चदुसु जीवसमासेसु पक्खित्तेसु अट्ठत्तीस जीवसमासा हवंति। एत्थ एगूणवीस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, तेत्तिया चेव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा हवंति, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि तेत्तिया चेव सव्वेदे सत्तावण्ण जीवसमासा हवंति। एदे[2] जीवसमासभेदा[3] सव्व-ओघेसु वत्तव्वा।

छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-

---

भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। प्रत्येकवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीव ये सभी पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। इसप्रकार चौबीस और बारह ये सभी जीवसमास मिलकर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, तैजस्कायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद साधारणवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणवनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्म भेद, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा अठारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, उतने ही अठारह निर्वृत्यपर्याप्तक और अठारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब इकट्ठे करनेपर चौपन जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त छत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकशरीरसंबन्धी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर प्रत्येकशरीरसंबन्धी बादरनिगोद प्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित इन दोनोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक इन चार जीवसमासोंके मिलानेपर अड़तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद साधारणशरीरवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्म भेदरूप तथा सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंसंबन्धी उन्नीस निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास होते हैं, उन्नीस ही निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं और उन्नीस ही लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं। ये सब मिलाकर सत्तावन जीवसमास होते हैं। ये उपर्युक्त जीवसमासोंके भेद समस्त ओघालापोंमें कहना चाहिए।

---

१ प्रतिषु 'पदिट्ठिद-पज्जत्ता—' इति पाठः। २ प्रतिषु 'वीए' इति पाठः।

३ सामण्णजीव तसथावरेसु इगिविगलसयलचरिमदुगे। इंदियकाये चरिमस्स य दुतिचदुपणगभेद-जुदे॥ पणजुगले तससहिये तसस्स दुतिचदुरपणगभेदजुदे। छद्दुगपत्तेयम्हि य तसस्स तियचदुरपणगभेदजदे॥ सगजुगलम्हि तसस्स य पणभंगजुदेसु होंति उणवीसा। एयादुणवीसोत्ति य इगिवितिगुणिदे हवे ठाणा॥ सामण्णेण तिपंती पढमा विदिया अपुण्णगे इदरे। पज्जत्ते लद्धिअपज्जत्तेऽपढमा हवे पंती॥ गो. जी. ७५-७८.

सत्तपाण-पंचपाण--छप्पाण-चत्तारिपाण- चत्तारिपाण- तिण्णिपाण-चत्तारिपाण-दोपाण-एगपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, पण्णारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[213] ।

जीवसमास आलापके आगे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालमें और अपर्याप्तकालमें छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलत्रय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्त-कालमें क्रमशः पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः नौ प्राण, सात प्राण; चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः आठ प्राण, छह प्राण; त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः सात प्राण, पांच प्राण; द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्त कालमें क्रमशः छह प्राण, चार प्राण; एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार प्राण, तीन प्राण; सयोगिकेवली जिनोंके चार प्राण तथा समुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें दो प्राण और अयोगिकेवली जिनोंके एक आयु प्राण होता है । चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत वेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

नं. २१३ षट्कायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	५७	प.अ. ६,६ ५,५ ४,४	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ ४,२ १	४ क्षीणसं.	४	५	६	१५ अयोग.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र.६ भा.६ अले.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एक्को वा दो वा तिण्णि वा चत्तारि वा पंच वा छव्वा सत्त वा अट्ठ वा णव वा दस वा एक्कारस वा बारस वा तेरस वा चउद्दस वा पण्णारस वा सोलस वा सत्तारस वा अट्ठारस वा एगूणवीस वा जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-एक्कपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, एगारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[२१४]।

उन्हीं षट्-कायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- चौदहों गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसंबन्धी एक, अथवा दो, अथवा तीन, अथवा चार, अथवा पांच, अथवा छह, अथवा सात, अथवा आठ, अथवा नौ, अथवा दश, अथवा ग्यारह, अथवा बारह, अथवा तेरह, अथवा चौदह, अथवा पन्द्रह, अथवा सोलह, अथवा सत्रह, अथवा अठारह, अथवा उन्नीस जीवसमास होते हैं; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और चार पर्याप्तियां; पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसंबन्धी दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रिय-जाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग और अयोगस्थान भी है; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन

नं. २१४ षट्कायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	१९	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४ ४ १	४ क्षीणसं.	४	५	६	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ अयो. १	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि एक्को वा दो वा, दो वा चत्तारि वा, तिण्णि वा छव्वा, चत्तारि वा अट्ठ वा, पंच वा दस वा, छव्वा बारस वा, सत्त वा चोद्दस वा, अट्ठ वा सोलस वा, णव वा अट्ठारस वा, दस वा वीस वा, एक्कारस वा बावीस वा, बारस वा चउवीस वा, तेरस वा छव्वीस वा, चोद्दस वा अट्ठावीस वा, पण्णारस वा तीस वा, सोलस वा बत्तीस वा, सत्तारस वा चोत्तीस वा, अट्ठारस वा छत्तीस वा, एगूणवीस वा अट्ठत्तीस वा जीवसमासा; छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादिआदिपंच जादीओ, पुढविकायादि छक्काया, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाया अकसाओ वा, छ णाणाणि, चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउसुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ;

दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी, तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते है।

विशेषार्थ-- यहां मूलमें सत्तावन जीवसमास बतला आये हैं उनमें उन्नीस जीवसमास पर्याप्तसंबन्धी हैं और अड़तीस अपर्याप्तसंबन्धी। उनमेंसे यहां पर्याप्तसंबन्धी उन्नीसका ही ग्रहण करना चाहिये। जिनका प्रकृतमें 'एक अथवा दो' इत्यादि रूपसे उल्लेख किया गया है।

उन्हीं षट्-कायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर-- मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयम और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये अपर्याप्तक जीवोंसंबन्धी एक अथवा दो, दो अथवा चार, तीन अथवा छह, चार अथवा आठ, पांच अथवा दश, छह अथवा बारह, सात अथवा चौदह, आठ अथवा सोलह, नौ अथवा अठारह, दश अथवा बीस, ग्यारह अथवा बाईस, बारह अथवा चौबीस, तेरह अथवा छब्बीस, चौदह अथवा अट्ठाईस, पन्द्रह अथवा तीस, सोलह अथवा बत्तीस, सत्रह अथवा चौतीस, अट्ठारह अथवा छत्तीस, उन्नीस अथवा अड़तीस जीवसमास होते हैं। छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मण ये चार योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा [२१५]।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अकाइया[1] त्ति मूलोघ-भंगो । णवरि मिच्छाइट्ठिस्स तिविहस्स वि कायाणुवाद-मूलोघम्हि[2] वुत्तजीवसमासा वत्तव्वा । णत्थि अणत्थ विसेसो ।

[२१६]पुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण-तिण्णि पाणा, चत्तारि

तथा अनुभयस्थान भी है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और उभय उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

विशेषार्थ— यहां मूलमें जो सत्तावन जीवसमास कहे हैं उनमें अपर्याप्त सामान्यके उन्नीस हैं जिनका यहांपर ' एक अथवा दो, दो अथवा चार, इत्यादि संख्याओंके कथनमें आई हुई पूर्ववर्ती संख्याओंका एक, दो, तीन इत्यादि संख्याओंसे निर्देश किया है । अपर्याप्तके निर्वृत्त्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त ऐसे दो भेद कर लेनेपर उनका निर्देश दो, चार, छह इत्यादि संख्याओंके द्वारा किया गया है । यहांपर इतना और समझ लेना चाहिये कि पूर्व पूर्ववर्ती संख्याएं जीवसमासोंके सामान्यरूपसे और उत्तर उत्तरवर्ती संख्याएं उनको विशेषरूपसे बतलाती हैं । इसका यह अभिप्राय हुआ कि किसी भी संख्याके द्वारा संपूर्ण अपर्याप्त जीव संग्रहीत कर लिये गये हैं । भिन्न भिन्न संख्याएं केवल उनके भेद-प्रभेदोंको सूचित करनेके लिये ही दी गई है ।

---

१ मु. अकाया । २ मु. मूलोघब्भुत्त ।

नं. २१५ षट्कायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
५ मि. सा. अ. प्र. स.	३८	६ अ. ५,, ४,,	७ ७ ६ ५ ४ ३ २	४ क्षीणसं.	४	५	६	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	३ अपग.	४ अकषा.	६ विभं. मनः विना.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ	५ सम्य. विना.	२ सं. असं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना. यु. उ.

नं. २१६ पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४ बा.प. ,, अ. सू.प. ,, अ.	४ प. ४ अ.	४ प. ३ अ.	४	१ ति.	१ एकें.	१ पृ.	३ औ.२ कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण

पर्याप्त जीवसमासके उन्नीस विकल्पोंमें भी यही क्रम जान लेना चाहिये। गोम्मटसार जीवकाण्डमें जीवसमासोंको बतलाते हुए तीन पंक्तियां कर दी हैं। पहली पंक्तिमें एक, दो आदि उन्नीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन सामान्यकी अपेक्षा किया है। दूसरी पंक्तिमें दो, चार आदि अड़तीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त और अपर्याप्त इन दो भेदोंकी अपेक्षा किया है। तिसरी पंक्तिमें तीन, छह आदि सत्तावनतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त इन तीन भेदोंकी अपेक्षा किया है।

सामान्य षट्कायिक जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अकायिक अर्थात् सिद्ध जीवों तकके आलाप मूल ओघालापके समान ही जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इन तीनों ही प्रकारके मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते समय कायानुवादके मूलोघालापमें कहे गये सभी जीवसमास कहना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्यत्र अन्य कोई विशेषता नहीं है।

पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त, बादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-अपर्याप्त ये चार जीवसमास; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त ये दो जीवसमास, अथवा शुद्ध बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त शुद्ध सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त, खर बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त और खर सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये चार जीवसमास; चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय,

किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१७]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो,

---

कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेषार्थ— यहां पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप कहते समय दो अथवा चार जीवसमास बतलाये हैं। उनमें दो जीवसमास बतलानेका कारण तो स्पष्ट ही है। परन्तु विकल्पसे जो चार जीवसमास बतलाये गये हैं उसके दो कारण प्रतीत होते हैं। एक तो यह कि गोम्मटसारकी जीवप्रबोधिनी टीकामें जीवसमासोंका विशेष वर्णन करते समय पृथिवीके शुद्धपृथिवी और खरपृथिवी ऐसे दो भेद किये हैं। ये दो भेद बादर और सूक्ष्मके भेदसे दो दो प्रकारके हो जाते हैं। इसप्रकार पर्याप्त अवस्था विशिष्ट इन चारों भेदोंके ग्रहण करनेपर चार जीवसमास हो जाते हैं। दूसरा कारण ऐसा प्रतीत होता है कि वीरसेनस्वामीने स्वयं बादर और सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके अतिरिक्त बादर और सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इसप्रकार तीन प्रकारके आलाप और बतलाये हैं। इनमेंसे प्रथम सामान्यालापमें पर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इन तीनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव हो जाता है और निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्यालापमें पर्याप्तक और निर्वृत्यपर्याप्तक इन दो प्रकारके जीवोंके आलापोंका ही अन्तर्भाव होता है। दूसरे पर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम और द्वितीय दोनों पर्याप्तालापोंमें वास्तवमें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, निर्वृत्तिसे पर्याप्तक जीव ही दोनों जगह पर्याप्तरूपसे ग्रहण किये गये हैं। अपर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम अपर्याप्तालापमें निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इन दोनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव होता है। परंतु निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके अपर्याप्तालापमें केवल एक निर्वृत्यपर्याप्तक कालसंबन्धी आलापोंका ही ग्रहण होता है। इनमेंसे निर्वृत्तिपर्याप्तककी अपर्याप्तावस्थामें पर्याप्तनामकर्मका

नं. २१७　　पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	२ बा प. सू. प. ४	४	४	४	१ ति.	१ एके.	१ पृ.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१८]।

बादरपुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण-तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ,

---

उदय तो रहता है परंतु उसकी पर्याप्तियां पूर्ण न होनेके कारण वह अपर्याप्त कहा जाता है। इसप्रकार निर्वृत्यपर्याप्तक पर्याप्तनामकर्मके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त भी है। प्रतीत होता है कि इसी विवक्षाको ध्यानमें रखकर वीरसेनस्वामीने यहांपर चार आलाप कहे हैं। यद्यपि प्रथम समाधान गोम्मटसारकी जीवप्रबोधिनी टीकाके आधारसे दिया गया है, परंतु उसकी यहांपर मुख्यता प्रतीत नहीं होती है, क्योंकि, आगे जलकायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान बतलाये हैं। परंतु जल आदिके उसी टीकामें शुद्ध आदि भेद नहीं किये हैं। अथवा इसी बातको ध्यानमें रखकर उक्त टीकामें केवल पृथिवीके चार भेद किये गये हों। इसप्रकार पृथिवीकायिक जीवोंके दो या चार जीवसमास जान लेना चाहिये।

उन्हीं पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चारों अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग;

नं. २१८ पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ बा.अ. सू.अ	४ अ.	३	४	१ ति.	१ ए.	१ पृ.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार. अनाहार.	२ साकार. अनाकार.

भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१९]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२०]।

नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २१९　　बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	२ बा. प. ,, अ.	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ एकें.	१ पृ.	३ औ २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. २२०　　बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ बा. प.	४	४	४	१ ति.	१ एकें.	१ पृ.	१ औदा	१ नपुं	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२१]।

एवं बादरपुढविणिव्वत्तिपज्जत्तस्स तिण्णि आलावा वत्तव्वा। बादरपुढविलद्धिअपज्जत्तस्स बादरेइंदिय-अपज्जत्त-भंगो। सुहुमपुढवीए सुहुमेइंदिय-भंगो। णवरि सुहुमपुढविकाइओ त्ति वत्तव्वं।

आउकाइयाणं पुढवि-भंगो। णवरि सामण्णालावे भण्णमाणे आउकाइओ, दव्वेण काउ-सुक्क-फलिहवण्ण-लेस्साओ वत्तव्वाओ। तेसिं चेव पज्जत्तकाले दव्वेण

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसी प्रकार बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये। बादर पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेषता यह है कि 'सूक्ष्म एकेन्द्रिय' के स्थानपर 'सूक्ष्म पृथिवीकायिक' ऐसा आलाप कहना चाहिए।

अप्कायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेष बात यह है कि सामान्य आलाप कहते समय 'पृथिवीकायिक' के स्थानपर 'अप्कायिक' और लेश्या आलाप कहते समय द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल

नं. २२१　　बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ बा.अ.	४ अ.	३	४	१ ति.	१ एके.	१ पृ.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सुहुमआऊणं काउलेस्सा बादरआऊणं फलिहवण्णलेस्सा। कुदो ? घणोदधि-घणवलयागास पदिद-पाणीयाणं धवलवण्ण-दंसणादो। धवल-कसण-पीयल-रत्ताअंब-पाणीय-दंसणादो ण धवलवण्णमेव पाणीयमिदि के वि भणंति, तण्ण घडदे। कुदो ? आधारभूमिमट्टियाए[1] संजोगेण जलस्स बहुवण्ण-ववहार-दंसणादो। आऊणं सहाववण्णो पुण धवलो चेव।

एवं चेव बादरआउकायस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा। णवरि पज्जत्तकाले दव्वेण फलिहलेस्सा एक्का चेव। णत्थि अण्णत्थ विसेसो। बादरआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पि तिण्णि आलावा एवं चेव वत्तव्वा। बादरआउलद्धिअपज्जत्ताणं बादरआउणिव्वत्तिअपज्जत्त-भंगो। सुहुमआउकाइयाणं सुहुमपुढविकाइय-भंगो। सुहुमआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताणं च सुहुमपुढविपज्जत्तापज्जत्त-भंगो।

तेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउकाइयाणं तेसिं चेव

लेश्याएं और पर्याप्तकालमें स्फटिकवर्णवाली अर्थात् शुक्ल लेश्या कहना चाहिए। उन्हीं सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत लेश्या कहना चाहिए। तथा बादरकायिक जीवोंके स्फटिकवर्णवाली शुक्ल लेश्या कहना चाहिए, क्योंकि, घनोदधिवात और घनवलयवात द्वारा आकाशसे गिरे हुए पानीका धवलवर्ण देखा जाता है। यहांपर कितने ही आचार्य ऐसा कहते हैं कि धवल, कृष्ण, पीत, रक्त और आताम्र वर्णका पानी देखा जानेसे पानी धवलवर्ण ही होता है, ऐसा कहना नहीं बनता है ? परन्तु उनका कहना युक्ति-संगत नहीं है; क्योंकि आधारभूत भूमीकी मट्टीके संयोगसे जलमें अनेक वर्णका व्यवहार देखा जाता है। किन्तु जलका स्वाभाविक वर्ण धवल ही है।

इसप्रकार बादर अप्कायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि उनके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे एक स्फटिक वर्णवाली शुक्ल लेश्या ही होती है, इसके सिवाय अन्य पृथिवीकायिकके आलापोंसे अप्कायिकके अन्य आलापोंमें और कोई विशेषता नहीं है। इसी प्रकार बादर अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके उक्त तीन आलाप कहना चाहिए। बादर अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्कायिक निर्वृत्यपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक, सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्यपर्याप्तक और सूक्ष्म अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके समान जानना चाहिए।

तैजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, बादरतैजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं बादरतैजस्कायिक पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, उन्हीं पर्याप्त नामकर्मके

---

१ मु. आवारभावे।

पज्जत्तापज्जत्ताणं[1] तेसिं चेव पज्जत्त-णामकम्मोदयतेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउलद्धिअपज्जत्ताणं च, आउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं[2] तेसिं चेव पज्जत्तणामकम्मोदय-आउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताणं च जहाकमेण भंगो। णवरि तेउकाइयाणं दव्वेण काउ-सुक्क-तवणिज्जलेस्साओ। तेसिं चेव पज्जत्ताणं दव्वेण काउ-तवणिज्जलेस्साओ[3]। एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं दोण्हं पि वत्तवं। बादरतेउकाइयाणं[4] तेउ-भंगो। एवं चेव तेसिं पज्जत्ताणं। णवरि दव्वेण तवणिज्जलेस्सा। एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं पि दव्वलेस्सा वत्तव्वा।

सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं[5] भंगो। वाउकाइयाणं तेउ-भंगो।

उदयवाले तैजस्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्त अपर्याप्त भेदोंके तथा बादर तैजस्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, बादर अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, उन्हीं पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, तथा बादर अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान यथाक्रमसे जानना चाहिए।

विशेषार्थ—तैजस्कायिक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं, इस बातके ध्वनित करनेके लिये मूलमें 'इव' या 'सदृश' ऐसा कोई पाठ नहीं दिया है। परन्तु पहले अप्कायिक जीवोंके संपूर्ण भेद-प्रभेदोंके आलाप कह आये हैं और यहां तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके कथन करनेका प्रकरण है, इसलिये प्रकृतमें तैजस्कायिक जीवोंके भेद-प्रभेदोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके भेद-प्रभेदोंके आलापोंके समान बतलाये हैं यही समझना चाहिए। मूलमें आये हुए 'जहाकमेण' पदसे भी इसी कथनकी पुष्टि होती है।

विशेष बात यह है कि तैजस्कायिक जीवोंके द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और तपनीय लेश्या होती है। तथा उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्मजीवोंके द्रव्यसे कापोतलेश्या और पर्याप्तक बादर-जीवोंके तपनीय लेश्या होती है। इसी प्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सामान्य और पर्याप्त इन दोनोंही प्रकारके तैजस्कायिक जीवोंके द्रव्यलेश्या कहना चाहिए। बादरतैजस्कायिक जीवोंके आलाप सामान्य तैजस्कायिकके आलापोंके समान जानना चाहिए। इसी प्रकार बादर तैजस्कायिक पर्याप्त जीवोंके आलाप भी होते हैं। विशेषता यह है कि इनके द्रव्यसे तपनीय लेश्या होती है। इसी प्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले तैजस्कायिक जीवोंके भी द्रव्यलेश्या कहना चाहिए।

सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। वायुकायिक जीवोंके आलाप तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना

१ मु. त्ताणं च पज्जत्त–। २ मु. त्ताणं पज्जत्त–। ३ बादरआऊतेऊ सुक्का तेऊ य × ×। गो. जी. ४९७. ४ मु. बादरकाइयाणं। ५ मु. –याणं सुहुमभंगो।